International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विश्वामित्र के राम

लेखक : डॉ० भवानीशंकर शर्मा 'महाजनीय'
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राज०)

प्राचीन भारत के इतिहास, भूगोल, विज्ञान, खगोल आदि के विषय में अनेक विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा है, उसे सब पढ़ने के साथ समझने का महत् प्रयास भी कर रहे हैं। कुछ समझ में आता है, तो कुछ नहीं। कुछ लेखकों ने अपने निर्मल दृष्टिकोण से लिखने का सत् प्रयास किया है, तो अन्यों नेअनर्गल प्रलाप भी बहुत किया है, क्योंकि वे किसी सम्प्रदाय, मज़हब आदि की मान्यता से जकड़े रहते हैं। यही कारण है कि ऐसे लोग यथार्थ को जानते हुए भी उसे छोड़कर मज़हब, सम्प्रदाय आदि की अवधारणाओं में तल्लीन होकर तदनुसार ही लिखते हैं। यह संसार में होता है और होता रहेगा। किन्तु, प्राचीन भारत के मनीषियों ने यथार्थ को लिखने में ही रुचि दिखाई, भले ही उनका देखना कभी-कभी अयथार्थ भी क्यों न हो। किन्तु, सत्य को जानने का सहज और महत् प्रयास अवश्य किया। हम उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों में ज्ञान की अविरल धारा को सुधारस के समान पीकर स्वयं को कृतकृत्य समझते हैं, तो उन पर अनुसन्धान करके उनमें निहित अप्रत्यक्ष ज्ञान को प्रकाशित करके स्वयं को बहुत बड़ा ज्ञानी समझने लगते हैं अथवा अज्ञानता के कारण उनसे भी अधिक स्वयं को ज्ञान का अनुसंधित्सु मानने लगते हैं और उन तत्त्ववित् महापुरुषों का संकेतात्मक परिचय देकर इतिश्री कर लेते हैं। किसी काव्य का रसास्वादन करके ग्रन्थकार के प्रयोजन में तो ध्यान देते हैं, उस काव्य की प्रशंसा करते हैं, किन्तु उस मन्त्रद्रष्टा या तत्त्ववित् पर कोई अधिक अनुसन्धान नहीं करते, जबकि उस ग्रन्थकार का समग्र चरित्र तो उस काव्य में उभर कर आता है। यद्यपि बहुत से सत्यप्रिय मनीषियों ने अपमी लेखनी उन सत्यप्रतिज्ञ लेखकों पर भी चलाई है, किन्तु अधिकांश ग्रन्थकारों का स्वस्थ चरित्र अभी भी अनुसन्धेय पड़ा है। आइए, आज हम उन्हीं महान् चिन्तकों में से दो महानायकों—महर्षि विश्वामित्र व उनके प्रिय शिष्य राम के विषय में थोड़ा जान लें। वाल्मीकि आदि ने राम के चरित्र पर बहुत लिखा है, क्योंकि विश्वामित्र ने उस चरित्र का निर्माण किया था, जो आज भी सबका आदर्श बना हुआ है। हम ग्रन्थों में प्राप्त विवरण के अनुसार विश्वामित्र-निर्मित राम के चरित्र को विशेष रूप से जानने का प्रयास करेंगे, क्योंकि रामराज्य आज भी गाँधी जैसे महापुरुषों की दृष्टि में श्रेष्ठ राज्य बना हुआ है, जिसमें सब सुखी थे।

विश्वामित्र कौन व कैसे हैं ?

विश्वामित्र को नायक की दृष्टि से देखें तो उनके दो प्रकार के चरित्र मिलते हैं—प्रथम **राजर्षि** चरित्र में वे उद्धत नायक बनकर उभरते हैं, महर्षि वशिष्ठ से झगड़ा मोल लेते हैं और द्वितीय **ब्रह्मर्षि** चरित्र में वे धीरप्रशान्त नायक होकर राम-लक्ष्मण जैसे लोकनायकों का निर्माण करते हैं।

विस्तार से बात करें तो प्रथम चरित्र वह है, जिसमें वे **राजर्षि** हैं और नायक की दृष्टि से **उद्धत** नायक ठहरते हैं। राजर्षि **विश्वामित्र** गाधिसुत हैं। साम्राज्य-विस्तार और उसके लिए आवश्यक नए-नए अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करना उनकी मौलिक प्रवृत्ति है। अहंकार और महत्त्वाकांक्षा के कारण वे सबसे बढ़कर होना चाहते हैं। इन दोनों प्रवृत्तियों के कारण वे महर्षि **वशिष्ठ** को भी अपनी उन्नति में बाधक तत्त्व समझने लगते हैं, उनके पास उपलब्ध संसाधनों को भी राज्य में अपनी प्रतिष्ठा के लिए उनसे छिनना चाहते हैं। इसके लिए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उनमें स्थित कोई भी नैतिक तत्त्व उभर कर नहीं आ पाता, जिसकी सहायता से वे महर्षि वशिष्ठ की **लोकमंगल** की भावना को समझ पाते। वे तो राजा होने कारण प्रत्येक श्रेष्ठ वस्तु को मात्र स्वयं की समझते रहते हैं। **रजस्** गुण की प्रधानता ही उनसे यह सब करवा रही थी, यहाँ तक की उनकी व उनके साम्राज्य की भी मंगल कामना करने वाले और समत्व के साक्षात् अवतारभूत महर्षि वशिष्ठ से **यज्ञधेनु—कामधेनु** जैसी अमूल्य धरोहर को छिनने के लिए उनसे युद्ध कर बैठते हैं। इतना ही नहीं, उस युद्ध में हारने और वशिष्ठ की शक्ति की पराकाष्ठा को जानने के बाद भी उनसे क्षमा माँगने के स्थान पर उनके प्रतिद्वन्द्वी बनकर उभरते हैं। घोर तपस्या करते हैं और प्रकृति के विरुद्ध होकर इन्द्रादिकों को भी अपना शत्रु बना लेते हैं। घोर तपस्या करने बावजूद उनका वासना से छुटकारा इसलिए नहीं हो पाता, क्योंकि वे अभी भी सकाम होकर स्वयं के लिए ही सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं। यही कारण है कि वे **मेनका** जैसी स्वर्गीय सुन्दरी के प्रेमपाश में जकड़ जाते हैं और अपनी घोर तपस्या का फल भी नष्ट कर बैठते हैं। अहंकार और महत्त्वाकांक्षा यही सब काम करवाते हैं।

उनका **द्वितीयचरित्र** उन्हें अहंकार और महत्त्वाकांक्षाओं से परे ले जाता है, जहाँ मात्र लोककल्याण की भावना उस पवित्र और मीठे जल वाली नदी के समान प्रवहमान होती है, जो जीवमात्र की रक्षार्थ धरा को सिंचित कर उसे सस्यश्यामला बना देती है। वे अपनी शक्तियों का उपयोग अब राक्षसी शक्तियों को परास्त करके **राम** जैसे उदात्त चरित्र के निर्माण में करने लगे हैं। वे अपने समक्ष हो रही मानवता की हत्या को और सहन करने में समर्थ नहीं हैं। शीघ्रातिशीघ्र लोक को दुष्टों की प्रताड़नाओं से मुक्त कर निर्भय करना चाहते हैं। पर ऐसा कौन है, जो उनके इन कार्यों को करने में समर्थ है? कौन है ऐसा जो इनके द्वारा प्रदत्त शक्तियों का दुरुपयोग नहीं करेगा? कौन है वह व्यक्ति जो नर-पिशाचों का समूल विनाश कर मानवता को निर्भय कर पाएगा? अनुसन्धान करते-करते अन्ततः उन्हें वह चरित्र मिल ही जाता है, जिसके हृदय में जीवमात्र के हित की कामना सदैव गतिशील है। जो प्रजा को पुत्र के समान मानता है और उनके सुख के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। साँवला-सलौना और लोक को आकृष्ट करने वाला वह व्यक्तित्व था—दशरथ-नन्दन **राम**। जिनके महर्षि **वशिष्ठ** कुलगुरु हैं, वे वशिष्ठ जिनको **महामति**विश्वामित्र कभी अपना सबसे बड़ा शत्रु समझते थे, किन्तु आज वे उनके आदर्श बन चुके थे, अपने नए स्वरूप के दाता होने के कारण। उनकी बाँछें महर्षि **वशिष्ठ** के शिष्य **राम** की अद्भुत योग्यता को सुनकर खिल उठती हैं। चल पड़ते हैं, उनको कुछ और अद्भुत शक्तियाँ प्रदान करने। (श्लोक-९-११, बा०का०, १९ सर्ग) अब वे राजर्षि नहीं, अपनी भयंकर तपस्या के कारण वे **महातपा,महातेजा**और **ब्रह्मर्षि** हैं (श्लोक-९-११, बा०का०, १९ सर्ग) , तभी तो वशिष्ठ के शिष्य **राम** के स्वरूप को जान पाते हैं और पहुँच जाते हैं दशरथ के दरबार में। यह है शान्त, दान्त, नैष्ठिक और तुरीयावस्था में निरत ब्रह्मर्षि विश्वामित्र का द्वितीय स्वरूप।

महर्षि विश्वामित्र की दृष्टि में राम —

राम का वास्तविक स्वरूप **वाल्मीकि**विरचित **रामायण** वाला ही माना जाना चाहिए, क्योंकि वाल्मीकि प्राचीनतम**कवि** हैं व राम के समकालीन माने जाते हैं। साथ ही; रामचरित्र के आख्याता हैं और उन्होंने कोई बढ़-चढ़कर वर्णन नहीं किया है। हाँ, वे **राम** को भगवान् का चरित्र न देकर एक आदर्श **महामानव**अथवा **मर्यादापुरुषोत्तम**के रूप में अवश्य प्रस्तुत करते हैं। ताकि मनुष्य मात्र उनके चरित्र में से कुछ भी अपने जीवन में उतार सके और राक्षसी संस्कृति से स्वयं को बचा सके; क्योंकि अधिकांश लोग किसी महान् नायक और नायिका को ही अपना आदर्श मानते हैं । इसलिए वाल्मीकि ने राम को जन-जन के नायक के रूप में प्रस्तुत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किया है। क्योंकि उस समय के समाज में रावण जैसे दुराचारी राक्षस से ग्राम, नगर, गिरि, गुहा, वन आदि में रहने वाले सभी लोग सन्त्रस्त थे ।इस भय से कम्पायमान जन-समुदाय को रावण, ताड़का, मारीच आदि के अत्याचारों से कौन मुक्त कर सकता है? यह साधारण मानव भय के अवगुंठन में देख नहीं पाता है, वे तो मात्र किसी चमत्कार की प्रतीक्षा में ही रहते हैं —कोई ऐसा चमत्कारी पुरुष आएगा, जो हमें इन राक्षसों के भय से मुक्त करेगा? जबकि **राम** जैसा महामानव इनके आस-पास में ही विचरण कर रहा होता है, बस पहचान नहीं पाते हैं। पहचानें भी कैसे, साधारण मानव जो ठहरे! उनको समझने के लिए दिव्य दृष्टि चाहिए, जो महर्षि **विश्वामित्र**थी और इसीलिए वे दशरथ के पास जाते हैं और उनसे राम को शिष्य के रूप माँगते हैं, उनकी अतुल्य शक्ति के साथ दिव्य शस्त्रास्त्रों से उन्हें विभूषित कर राक्षसी-संस्कृति का मूलोच्छेदन करने के लिए। महाराज दशरथ भी मोह-माया के कारण राम की दिव्य शक्तियों को नहीं जान पाए, उन्हें भी विश्वामित्र के साथ राम को भेजते हुए भय लगता है कि राम मेरी आँखों का तारा कहीं राक्षसों का शिकार न बन जाए। वाल्मीकि ने यह सब अपनी आँखों से देखा था, प्रतिदिन उनके चरित्र को सुना था । इसलिए आदिकवि**वाल्मीकि** ने राम के जीवन को आधार बनाकर रामायण को लिखा । क्योंकि ऐसा महान् व्यक्तित्व ही सामान्य और विशिष्ट जन में प्रियत्व को प्राप्त कर सकता था और जन-जन भी स्वयं को वैसा बनाने के लिए कटिबद्ध हो सकता था। यही सोचकर उन्होंने रामायण की रचना की।

स्वयं **वाल्मीकि** ने राम को किस रूप में देखाया इस प्रकार कहें कि उनकी दृष्टि में राम का दैहिक (बाह्य) और आन्तरिक (गुणात्मक) स्वरूप कैसा था? वास्तव में वाल्मीकि ने अपने राम कोजिन-जिन रूपों में देखा, उन रूपों को अपने पात्रों के मुख से कहलवाया है। उन पात्रों में से वाल्मीकि ने राम के **गुरु** या उनके **भक्त** महर्षि विश्वामित्रके मुख से क्या कहलवाया है? अथवा यों कहें कि राम के समग्र चरित्र में से **विश्वामित्र** ने गुरु व भक्त की दृष्टि से किन योग्यताओं और क्षमताओं को देखा?आइए, हम उस पर सप्रमाण अनुसन्धान करें—

गुरु विश्वामित्र के राम —

गुरु में माता के हृदय का असीम **वात्सल्य** और पिता के अतुल्य विवेक की **ताड़ना**—दोनों का अपूर्व संगम होता है। तभी तो वह कुम्भकार के घट के समान श्रेष्ठ शिष्य का निर्माण करता है । वह शिष्य की कमियों को दूर करने के लिए बाहर से दुर्ग्राह्यशाब्दिक चोट मारता रहता है, किन्तु वह कहीं उनके दुरूह ज्ञान के प्रहारों से भीतर ही भीतरस्वयं को उसके अधिगम में अपात्र मानकर टूट न जाए, एतदर्थ वह उसके साथ अमित वात्सल्य का व्यवहार भी रखता है।**विश्वामित्र** जब **राम** को दशरथ से माँगने उनके समक्ष जाते हैं, तो उनके साथ बहुत मधुर व्यवहार रखते हुए उनकी व उनके वंश की प्रशंसा करते हैं । किन्तु राम को माँगने के बाद दशरथ के पुत्र-मोह को देखकर अपना कठोर रूप भी दिखाते हैं । वह सब इसलिए था कि कहीं राम उसके इस व्यवहार के कारण दिव्य विद्या-कौशल से वंचित न रह जाए।वे चाहते थे कि राम जितने देह से आकर्षक हैं, उससे कहीं अधिक अपने श्रेष्ठ गुणों और कर्मों से भी लोकप्रिय हो सकें । जो-जो दिव्य शस्त्र-विद्याएँ और श्रेष्ठ कौशल उनके पास हैं, वे सुपात्र राम को दे सकें —यह उनका दृढ निश्चय था।क्योंकि विश्वामित्र के पास जो अस्त्र-शस्त्र थे, वे किसी और के पास नहीं थे। रावण बहुत भयंकर वीर था, उसके पास लगभग सभी अस्त्र-शस्त्र थे। साथ ही, रावण व राक्षस मायावी थे, उनके सन्त्रास से संसार को मुक्ति दिलाना कोई सरल कार्य नहीं था । जिसके पास कुम्भकरण, मेघनाद, मारीच, कालनेमि, खर, दूषण जैसे अनेक मायावी और भयंकर राक्षस थे, उनको सामान्य अस्त्र-शस्त्रों से नहीं जीता जा सकता था । अतः अमितवीर्य राम को सभी विद्याएँ प्रदान करना आवश्यक था । विश्वामित्र के राम दैहिक शक्ति से अजेय थे, किन्तु वे माया, छल-छद्म

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नहीं जानते थे। वे प्रजारंजन में बहुत दक्ष थे, लेकिन राक्षसों की क्रूरता, बीभत्सता और नृशंसता उनमें नहीं थीं। राक्षसों की अवसरवादिता से वे अपरिचित थे। वे दुरूह पर्वतों, भयंकर जंगलों, घोर शब्दमयी नदियों के तेज प्रवाह आदि से अभी अपरिचित थे, अतः इन सबको निकटता से दिखाकर उनमें रहने, चलने-फिरने का भी बोध कराना अत्यन्त आवश्यक था । संकट में उन जंगलों में उनकी कौन सहायता कर सकते हैं, उनसे परिचय कराना भी ज़रूरी था । टेढ़े-मेढ़े दुर्गम मार्गों में कैसे चलना पड़ता है । विश्वामित्र बहुत दूरद्रष्टा गुरु थे।अपने शिष्य को सर्वगुणसम्पन्न करने के साथ उन्हें व्यावहारिक ज्ञान देना भी आवश्यक समझते थे ।अतः भयंकर जंगल में भ्रमण कराते हुए, छल-छद्मी और नरभक्षी राक्षसों के आवासों से परिचय कराकर उन्हें सावधान करते हुए मारना सिखाया। आगे रावण, कुम्भकरण, मेघनाद जैसे त्रिलोक-विजयी घोर राक्षसों से लड़ना था। उसके लिए उनकी यह पूर्व तैयारी का उपक्रम था । जिसमें राम बहुत सफल और गुरु की कसौटी पर खरे उतरे। विश्वामित्र राम के अपूर्व सौन्दर्य, सौम्य स्वभाव और अजेय शौर्य से सबको न केवल परिचित कराना चाहते थे, अपितु सामान्य जन जो राक्षसों की क्रूरता से पीड़ित था, उनमें "राम हमें इन राक्षसों से सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं" यह सुरक्षा का भाव भी जागृत करना चाहते थे । अतः महाराज **जनक** द्वारा घोषित स्वपुत्री सीता के स्वयंवर में उन्हें ले गए, जहाँ सारी दुनिया के सबसे बड़े वीर आए थे । सामान्य जनता भी यह सब देखने के लिए आतुर सी ख़ड़ी थी, वे जानते थे कि उस शिव-धनुष पर प्रत्यंचा केवल राम ही चढ़ा सकते थे।क्योंकि उनके समान कोई भी शक्तिशाली नहीं है । यह सब हुआ भी, सबने राम के ललित सौन्दर्य के साथ अनुपम शौर्य और शक्ति को प्रत्यक्ष देखा । भार्गव **परशुराम** जिनके नाम को सुनकर ही सारी धरती काँपती थी, वे भी उनके सामने जब नत-मस्तक हुए तो वीरों, राक्षसों और जनता को ज्ञात हो गया कि इनसे अधिक कोई शक्तिशाली नहीं है।

इस स्वयंवर से महामुनि **विश्वामित्र** ने संसार को बता दिया कि **राम** से बढ़कर सम्पूर्ण विश्व में न तो कोई वीर है, न ही कोई ऐसा चरित्रवान् है, न बुद्धिमान् है, न कोई ऐसा लोकप्रिय है, न ही ऐसा कोई विश्वसनीय व्यक्ति है और न ही इनके समान समदर्शी व्यक्तित्व ही है। राम सारे संसार को सुरक्षा प्रदान करने में सर्वश्रेष्ठ या योग्यतम पात्र है । उन्होंने राम के गुणों को देखते हुए जो सम्बोधन और विशेषण दिए हैं, उनसे उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कथन हुआ है। आइए, उनके उन सम्बोधन और विशेषणों पर भी थोड़ा दृष्टिपात कर लें।

राम के लिए प्रयुक्त रामायणीय विशेषण—

सत्यपराक्रमः—सत्यरूप पराक्रम वाला, **काकपक्षधरः**—काक (कौवा) पंख को धारण करने वाला, महायशाः—महान् यशवाला, **वीरः**—योद्धा (८,१४ एकोनविंशे सर्गे बालकाण्डे), **महात्मा**—साधु, **राजीवलोचनः**—कमल के समान नेत्र वाला (१२,१४,१७, एकोनविंशे सर्गे बालकाण्डे), **विग्रहवान्धर्मः**—साक्षात् शरीर धारण किया हुआ धर्म, **वीर्यवतांवरः**—योद्धाओं में श्रेष्ठ, **भीमविक्रमः**—महान् पराक्रमी,**दिवाकरःइव**—सूर्य के समान आदि विशेषणों में उनके महान् और गुण कार्य छिपे हुए हैं ।जब भी कोई पात्र बोलता है तो वह उनमें अलौकिक गुणों को ही देखता है । वास्तव में राम ऐसे पात्र हैं, जो गुणों के सागर हैं। वे तन से जितने सुन्दर हैं, उससे भी अधिक उनके मन का सौन्दर्य विकीर्ण होता दिखाई देता है । इन सभी योग्यताओं को उन्होंने वशिष्ठ और विश्वामित्र के हर व्यक्ति से ग्रहण किया है । किन्तु; अन्तिम रूप से विश्वामित्र ने ही राम को तराशा था। जिसके फलस्वरूप वे लोकनायक बन सके।

---***---***---